भारतीय अलंकारिक कला में आकल्पन का शैलीगत इतिहास–एक संक्षिप्त रूपरेखा।

डॉ अर्चना मिश्रा

पाषाण, ताम्र और लौह काल के मानवों ने अपने–अपने समय में अपनी–अपनी योग्यता के अनुसार जो कलात्मक विकास किया वह पुरातत्व की खोज ने हम पर प्रकट कर दिया है। जितनी संस्कृति मानव में उत्पन्न हुई उतनी ही कलात्मक प्रगति भी उसने की। कला मानव संस्कृति का मूर्त स्वरूप है यदि यह कहा जाए तो अनुचित न होगा । जो कुछ भी सांस्कृतिक प्रगतियाँ मनुष्य ने की वे सब उसने उसी काल में रेखाबद्ध भी कर लेने का प्रयत्न किया, शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण हुए तथा मिट्टी, काष्ठ, धातु, चर्म आदि उपकरणों पर चित्रित किए गए वे प्रकरण साक्षी हैं उस प्रगति के जो मनुष्य ने क्रमशः युगों तक की। भारतीय कला जगत में सबसे पुराने कला चिन्ह चट्टानों पर या गुफाओं में इंगित मिलते हैं। कोई ज्यामितीय आकार या रेखाओं द्वारा बनाया गया चित्र जिसकी पुनरावृत्ति की गई हो आकल्पन कहलाती है।

प्रागैतिहासिक काल के चित्रों में आकल्पनः–

प्रागैतिहासिक काल जिसे आदिम काल भी कहा जाता है। इन चित्रों के समस्त उदाहरण लाल, नीले या पीले ओर सफेद रंगों से बने हैं। अधिकांश आकृतियों के निर्माण में सीधी रेखा, वक्र और आयत आदि ज्यामितीय आकारों का प्रयोग है। कई ज्यामितीय आकारों को सांकेतिक रूप में भी प्रयोग किया गया है। जिसमें स्वास्तिक, त्रिभुज, वृत्त, षटकोण तथा आयताकार हैं। सम्भवतः इन आकारों से प्रकृति की विभिन्न शक्तियों या जादू के विश्वासों को व्यक्त किया गया है। यद्यपि यह चित्र असंयत और कठोर है। परंतु इनमें गति तथा सजीवता है और तूलिका की शक्ति इनकी प्रमुख विशेषता है। अधिकांश चित्रकारी रेखा और सपाट रंगों के प्रयोग से बनाए गये हैं। इन चित्रों की सरलता, सुगमता तथा सूक्ष्म रेखांकन पद्धति आज के कलाकार के लिए एक महान प्रेरणा है। इन रेखांकित चित्रों को अलंकारिकता के श्रेणी में नहीं रखा गया है। क्योंकि इस समय के मनुष्यों को शायद अलंकारिकता का बोध नहीं रहा होगा। अतः कृतियों को भरने के लिए उन्होंने सजावट की जो कि सुन्दर और प्रभावशील है।

प्रागैतिहासिक चित्रकला के उदाहरणः–

भीमबेटका – भीमबेटका के चित्रों में रेखाओं का प्रयोग इतनी सुंदरता और सटीकता से हुआ है कि कहीं भी चित्र अनियमित से नहीं नजर आते उस समय प्राप्त हुए आकल्पन आज भी प्रयोग किए जाते हैं। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के लगभग 40 कि.मी. दक्षिण में भीमबेटका की पहाड़ियाँ स्थित हैं । यहाँ लगभग 600 प्राचीन गुफायें प्राप्त हुई हैं तथा 375 गुफाओं में चित्रों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन चित्रों का समय लगभग 10,000 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक का माना गया है। आकल्पन का प्रयोग आकृतियों को अलंकृति करने में भी किया गया है।

उदा. चित्र 1 –भीमबेटका में (50 से.मी.) का, एक चीता का चित्र प्राप्त हुआ है जिसे रेखाओं तथा बिन्दुओं द्वारा बहुत सुन्दरता से बनाया गया है उसके शरीर को

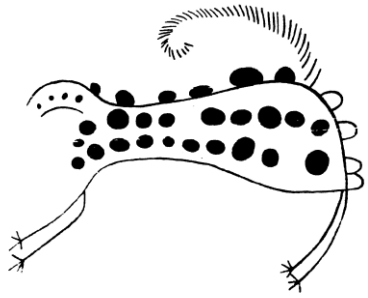

चित्र 1 (भीमबेटका, 50 से.मी. चीता)

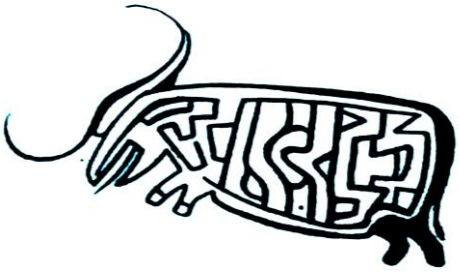

चित्रः 2. (भीमबेटका, 70 से.मी. जंगली सुअर)

बनाने के लिए छोटी–बड़ी बिन्दुओं द्वारा सजाया गया है तथा पूँछ को रेखाओं द्वारा बहुत सुंदरता से बनाया गया है।द**चित्र 2** एक अन्य चित्र में जंगली सुअर को जो कि (90 से.मी.) का है ज्यामितीय आकारों द्वारा मोटी रेखाओं का प्रयोग कर विस्तृत शारीरिक रचना बनाई गई है। इन आकारों को जंगली सुअर के पेट के अंदर ही सजाया गया है। एक अन्य **चित्र (3)** सांड डिजाईन के साथ बनाया गया है। जो कि लगभग 70 से.मी. का है यहाँ जानवरों की अंदरूनी संरचना सी नजर आती है। इसमें पेट और मुँह का X-Ray चित्रित किया गया है। भीमबेटका में मिले एक अन्य जंगली सुअर का चित्र जो कि 100 सें.मी. का है जिसे प्रवाह पूर्व लंबी सीगों का साथ बनाया गया है।

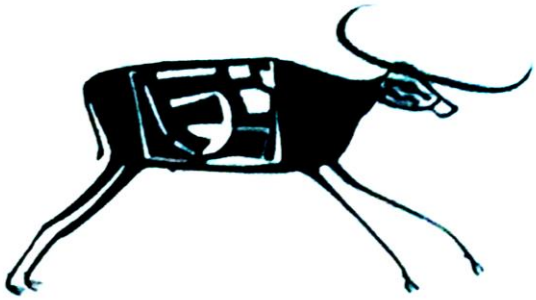

चित्र (3) जंगली सांड भीमबेटका, (70 से.मी.)

चित्र (4) (भीमबेटका, मध्य पाषाण युग, जंगली सुअर (100 से. मी.)

इस जंगली सुअर को भिन्न – भिन्न आकारों की पुनरावृत्ति कर अलंकृत किया गया है। इस चित्र में ज्यामितीय आकारों का बहुत सुन्दरता से प्रयोग किया गया है । **चित्र (4)** भीमबेटका में प्राप्त घोड़े का यह चित्र जिसे एक आदमी आगे ले जा रहा है तथा दूसरा उसके पूंछ को खींच रहा है को रेखाओं द्वारा बहुत सुंदरता से सजाया गया है।**चित्र (5)** भीमबेटका के इस शिकारी ने कमर में तथा सर पर वस्त्र पहना है। साथ ही धनुष और तीर से सुसज्जित है। यहाँ कमर को चतुर्भुज तथा सर को पंचभुज डिजाइन से सजाया गया है । दो अन्य आखेटकों के सर पर आंख बनाई गई है **चित्र (6)** भीमबेटका की तरह ही जोरा में भी गुप्त काल के चित्र प्राप्त हुए हैं। यहाँ प्राप्त चित्र में घोड़े तथा घुड़सवार को बहुत ही सजाया गया है। घुड़सवार शायद राजा है जिसके हाथ में तलवार है साथ ही घोड़े के आगे दो सैनिक भी बनाए गए हैं। ये सभी रेखाओं द्वारा

सजाये गए हैं। सभी ने वस्त्र तथा पगड़ी पहनी है। सैनिकों के भी एक हाथ में लतवार तथा दूसरे हाथ में ढाल है। इसमें रेखाओं का बहुत सुन्दर प्रयोग किया गया है। **चित्र(7)**

चित्र(5) (भीमबेटका, घोड़ा (50 से.मी.) **चित्र(6) शिकारी, (10–15 से.मी.)**

चित्र(7) (जोरा, गुप्त काल, घोड़ा (8 से.मी.)

जोरा से प्राप्त आखेटक की कृति थोड़ी भिन्न है चित्र देखकर यह प्रतीत होता है कि उस समय मनुष्य पक्षियों से बहुत प्रेरित रहा होगा क्योंकि उसकी सजावट देखने में पक्षियों जैसी दिखाई देती है **चित्र (8)** । **चित्र (9)** जोरा में प्राप्त (साँड) को सपाट रंग द्वारा भरा गया है बीच में दो त्रिभुज है तथा पूंछ पर बारीक लाइन द्वारा बालों को दर्शाया गया है। यह साँड 20 से.मी. का है। कई ज्यामितीय रेखाओं का भी प्रयोग किया गया है।

चित्र (9) (जोरा, सॉड 20 से.मी.)

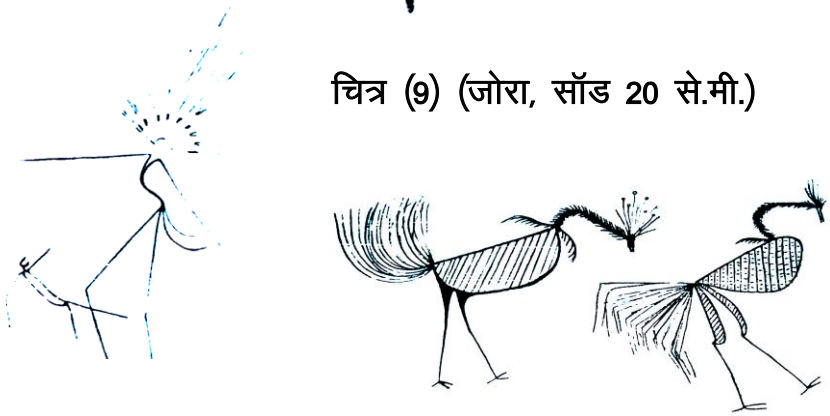

चित्र (8) (जोरा,मध्य पाषाण युग) चित्र (10) (जोरा,कुषाण काल, दो सारस (30 से.मी.)

यहाँ प्राप्त पक्षियों के चित्र में दो सारस दिखायी देते हैं जो कि रेखाओं तथा बिन्दुओं द्वारा सजाया गया है। इन पक्षियों को समानान्तर रेखाओं, तथा बिंदुओं द्वारा सजाया गया है। यहाँ प्राप्त सॉड़ का 400 से.मी. का चित्र भव्य है और पूरी तरह बिन्दुओं द्वारा भरा गया है **चित्र (11)** । इस चित्र में बच्चे हैं। गर्भ धारण किये हुए गैंडे की शारीरिक संरचना भी बदली हुयी है। यह सब रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया है रामछाजा की गुफायें मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में पड़ती हैं। यहाँ प्राप्त एक चित्र में जानवर का न सिर्फ अन्दरूनी ढांचा दिखाया गया है बल्कि उसका हृदय और पेट की इंगित किया गया है **चित्र (12)** यह सब बहुत खूबसूरती से इंगित है। यह चित्र लगभग 30 से.मी. का है। वहीं दूसरी जगह गैंडे को गर्भ धारण किये हुए दिखाया गया है। जहाँ एक चित्र के पेट में एक बच्चा है वहीं दूसरी कृति में दो बच्चे हैं। **चित्र (13)**

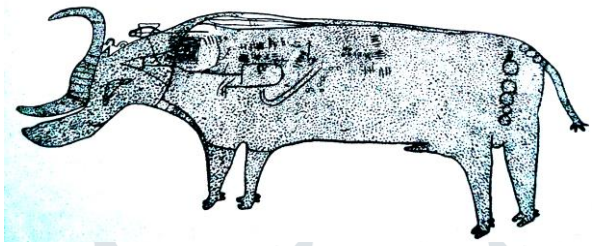

चित्र (11) (जोरा, सॉड 400 से.मी.)

चित्र (12) (रामछाजा, (30 से.मी.)

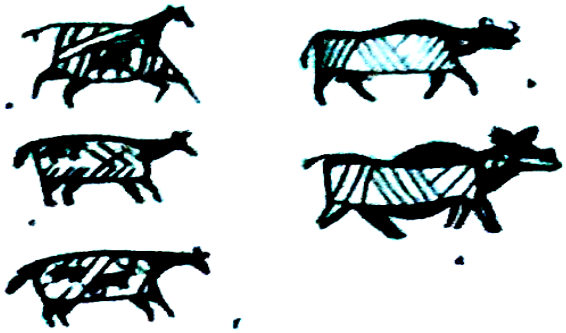

चित्र (13) (रामाछाजा, गर्भवती हिरणी (15 से.मी.)

गाँधी सागर – मध्यप्रदेश के चंबल में चर्तुभुज नुला की मीलों फैली पहाड़ियों में प्राप्त चित्र अद्भुत हैं। यहां प्रस्तुत कुछ जानवर अन्य गुफाओं के जानवरों से भिन्न हैं। जैसे छिपकली, मगरमच्छ, हिरण Dugongsआदि यहाँ की कृतियों को X-Ray स्टाईल में इंगित किया गया है। Dugongs यहाँ का धार्मिक जानवर है जिसका अंकन बहुतायत में हुआ है। जिसे अलग–अलग रूप से दिखाया गया है तथा भिन्न–भिन्न आकारों से सजाया गया है। **चित्र (14)** यहाँ एक अधूरा चित्र भी मिला है जिसे मगरमच्छ या छिपकली का माना जा सकता है। यह चित्र X-Ray स्टाईल में पाचन संबंधी अंगों को दिखाते हुए बनाया गया है **चित्र(15)** साथ ही Dugongs जो यहाँ का धार्मिक जानवर है के साथ कुछ मनुष्यों को भी हथियारों के साथ चित्रित किया है।

चित्र (14) गाँधी सागर,(मध्य पाषाण युग)

चित्र(15) गाँधी सागर मध्य पाषाण युग मगरमच्छ या छिपकली (100 से.मी.)

खरवाई– मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। यहाँ प्राप्त चित्र बहुत रोचक हैं एक चित्र जिसमें जोड़ियों को नृत्य करते हुए दिखाया गया है। ये स्त्री–पुरूष की जोड़ियाँ नृत्य में रत हैं। ये सभी जोड़ियाँ एक जैसी ही नजर हा रही हैं। **चित्र (16)** एक अन्य चित्र में अलग–अलग अलंकारों से सुसज्जित महिलाएँ नृत्य कर रही हैं । उनके चारों ओर हरे रंग की रेखा भी बनायी गयी है जो कि इनके आश्रय या चारदीवारो को इंगित करती हैं। इसमें लगभग सभी के साज–सज्जा में थोड़ा –थोड़ा फर्क है **चित्र (17)**यहाँ एक बहुत की सुन्दर चित्र बंदरों का है एक पेड़ पर 14,15 बंदर चढ़कर मस्ती कर रहे हैं तथा नीचे शिकारी हथियारों से सुसज्जित जा रहे हैं। यह पूरा चित्र रेखाओं के द्वारा ही बनाया गया है **चित्र (18)** इसी प्रकार आदिम काल में कई जगह शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। जिनमें रेखाओं तथा ज्यामितीय आकारों का प्रयोग हुआ । वहाँ प्राप्त मनुष्यों के रेखाचित्र आज भी इस्तेमाल होते है। रेखाओं का ये जादू आज भी देखने को मिलता है।

चित्र (16) खरवाई, मध्य पाषाण युग)

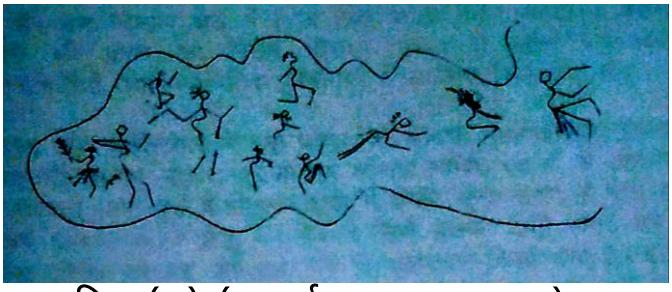

चित्र (17) (खरवाई, मध्य पाषाण युग)

चित्र (18) (खरवाई, मध्य पाषाण युग)

सिन्धु घाटी सभ्यता प्रागैतिहासिक काल के समाप्त होते ही धातु युग के साथ वैदिक काल का उदय होता है। इसमें प्रमुख मोहनजोदड़ों और हड़प्पा, सिन्धु नदी की घाटी में स्थित थे। यहाँ एक उच्च सभ्यता विकसित हुयी। सिन्धु घाटी सभ्यता का समय 3500 ई.पू. 2500 ई.पू. का है। इस विशाल क्षेत्र में लाल तथा काली पकी मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का विशेष विकास हुआ । ये बर्तन पशु–पक्षी, मानवाकृतियाँ तथा ज्यामितिक अभिप्रायों से अलंकृत किये जाते थे।

भारत तथा पाकिस्तान में इस प्रकार की सामग्री मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चान्हूदड़ों, झांगर, झूकर, कुल्ली एवं लोथल नामक स्थानों से उत्खनन के पश्चात प्राप्त हुई है। मोहनजोदड़ो में मिली चूना पत्थर से बना यह शिल्प 3000–2000 ई.पू. का है न सिर्फ इसकी दाढ़ी बनाई गई है बल्कि इसके सर पर और हाथ पर भी अलंकरण किया गया है। इसके कपड़ों को फूलों तथा गोलों से सजाया गया है। इन फूलों को उभार कर बनाया गया है जैसा कि आप **चित्र (19)** में देख सकते हैं।

इस चित्र के कपड़ों पर बने मोटिफ्स बहुत ही सुन्दर हैं। यहाँ मोहनजोदड़ो के राजा के लिए कतिपय प्रतीकों की अवधारणा की गई है। जैसे श्रीलक्ष्मी, सूर्य, चन्द्र, गणपति, अर्द्धनारेश्वर, शिवलिंग, गरूड़, ब्रम्हा, शिवलिंग, धर्मचक्र, बोधि–वृक्ष, त्रिरत्न, स्तूप, नागराज आदि के साथ–साथ प्रभामण्डल, पदचिन्ह और पंख भी सम्मिलित हैं। ये भारतीय कला–प्रतीक कला के विविध माध्यमों से रूपांतरित हुए है। भारत वर्ष में प्रागैतिहासिक कृषक जातियाँ उत्तरी बलूचिस्तान से सिंध तक 4000 ई.पू. तक बस चुकी थी। यह कृषक जातियाँ काली तथा लाल मिट्टी के बर्तन बनाती थी। यह बर्तन सरल ढंग के रंगीन आलेखनों से सजाये जाते थे। इन आलेखनों की चित्रकारी आदिम शैली की है। यहाँ मिट्टी को पकाकर बनाई गई मोहरों पर भैंसे, गैंडे, वृषभ, सुअर इत्यादि पशु की आकृतियों के साथ ही लिपि चिन्ह भी अंकित हैं। इन पशुओं के गठन तथा रचना में यर्थाथता

है। इन मुहरों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि चित्रकला का इस क्षेत्र में पर्याप्त विकास हो चुका था। मोहनजोदड़ो में प्राप्त कुछ सील जिसमें हाथी, गैंडा तथा वृषभ को देखा जा सकता है अत्याधिक आकर्षक हैं । इसी प्रकार यहाँ प्राप्त प्लेट मोटिफ्स अलकरण का सुन्दर उदाहरण है। चित्र (20)

चित्र (19)सिन्धु घाटी सभ्यता, शिल्प 3000–2000 ई.पू.

चित्र (20) काँस्य सील, मोहनजोदड़ो

मोहनजोदड़ों में प्राप्त लंबी सीलों पर लिपियाँ अंकित हैं जो कि सांकेतिक मोटिफ द्वारा लिखी गयी हैं। इन सीलों पर पशुओं का अंकन नहीं हुआ । परन्तु ज्यामितीय आकारों से बने इने मोटिफ में भारतीय धार्मिक चिन्हों को आसानी से देखा जा सकता है। **चित्र (21)**

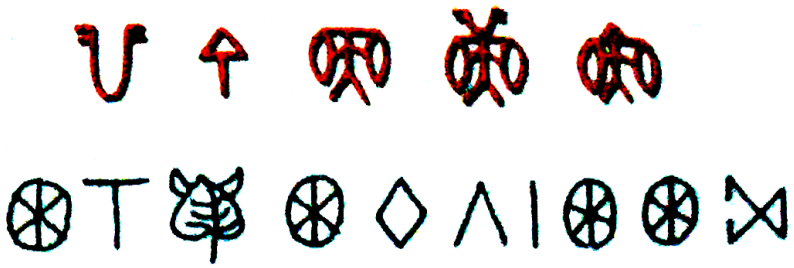

चित्र (21) लंबी सीलों पर अंकित लिपियाँ

अजन्ता में प्राप्त आरंभिक चित्रों की शैली में सांची की शिल्प शैली से इतनी समानता है कि इसको निश्चित रूप से एक ही समय का माना जा सकता है। यह गुफायें दक्षिण के आन्ध्र राजाओं के संरक्षण में चित्रित की गई थीं। परंतु अजन्ता के आधकांश चित्र चालुक्य राजाओं (550–642 ई.) तथा बरार के वाकाटक राजाओं के समय में बनाए गए । सोलहवीं गुफा में एक वाकाटक लेख भी है। **चित्र (22)**

अजन्ता में फूल पत्तियों तथा पशु–पक्षियों के अलंकरण द्वारा सजाया गया है। चित्रों का आकल्पन सुन्दर अलंकारिक है। भारतवर्ष में विकसित अजन्ता की कला उत्कृष्ट कला बन गई। अजन्ता की चित्रकारी में अलंकारिकता का चरम विकास दिखाई पड़ता है।

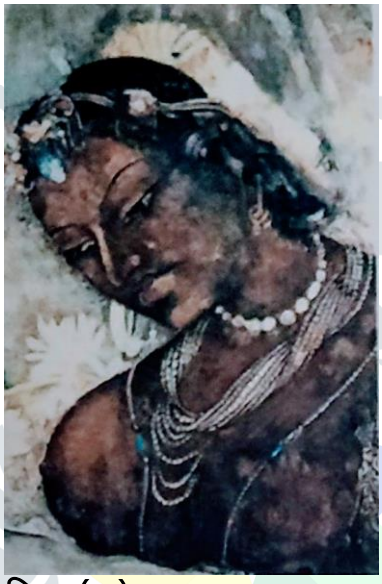

चित्र (22) अजन्ता, गुप्त काल

इस अलंकारिकता को प्राप्त करने के लिए चित्रकार ने ज्यामितीय आकारों की सहायता ग्रहण की। ज्यामितीय आकारों के संयोग से चित्रकार ने यथार्थ को एक आदर्श और काल्पनिक रूप प्रदान किया है। इस प्रकार यथार्थ और ज्यामितीय गोलाई युक्त आकारों के सम्मिश्रण से मौलिक तथा अलंकारिक रूपों का सृजन करना कलाकारों की एक महान विशेषता है और अजन्ता के कलाकारों ने आकृतियों को सरलतम रूप में बाँधने की सफल चेष्टा की है। सरल तथा अलंकारिक आलेखनों में कलाकारों ने अपनी कल्पना तथा भावना की मधुर और श्रृंगारमयी लड़ी को जोड़ दिया है। अतएव यही कारण है कि इस शैली का अलंकारी पक्ष सजीव हो पाया है उसमें भावना, आत्मा और नैसर्गिक रूप का उज्जवल रूप दिखाई देता है। **चित्र (23)**

अजन्ता और बाघ आदि गुफाओं के चित्रण में अलंकारिक गोलाई युक्त मोटिफ्स का प्रयोग बहुतायत में हुआ। इन मोटिफ्स में कमल के फूल, पत्ते, कली तथा अलंकारिक गोलाई युक्त लहरदार आकल्पन का प्रयोग किया गया।

बाघ गुफाओं के चित्रों में मनमुग्धकारी आलेखों का अंकन मिलता है। प्रस्तुत चित्र के अलंकरण में हम देख सकते हैं कि फूलों गोलाकारों तथा रेखाओं का प्रयोग किया गया है। वहीं सिगरिया की गुफा से प्राप्त चित्रों का अलंकरण भिन्न है। **चित्र (24)**

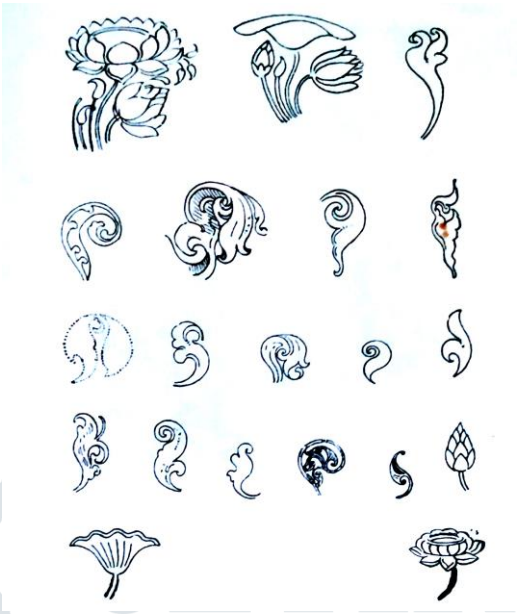

चित्र (23) अजंता एवं बाघ आदि गुफाओं तथा अन्य प्राचीन चित्रो में प्राप्त कमल के पत्ते, फूल एवं कली आदि का रूप

चित्र (24) सिगरिया

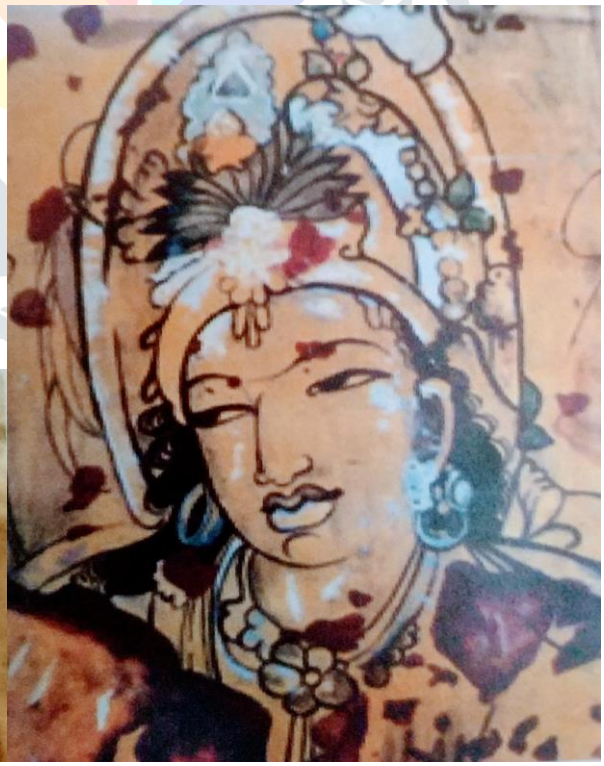

चित्र (25) बाघ गुफा

मध्यकाल में पटचित्रों की परम्परा पाल काल में कथाओं अथवा महाकाव्यों को चित्रित करने की परम्परा से प्रारंभ हो गयी थी। ये कुण्डलित रूप में होते थे। गुप्तकाल की चित्रकला, अथवा कथा चित्रों में जीवन कथा या काव्य चित्रण की परम्परा थी। प्रकृति को मानव ने देवता के रूप में स्वीकारा । फलस्वरूप धार्मिक आस्था के रूप में तो कला में प्राकृति ने स्थान पाया ही, अलंकरण व प्रतीक रूप में भी प्रकृति अभिप्रायों को विशेष स्थान रहा है। जैन शैली के चित्रों में यहाँ हम देख सकते हैं कि मोटिफ्स का प्रयोग कितनी सरलता और सुंदरता से हुआ **चित्र (26)**। पेड़ों, वस्त्र, फूलों, सिंहासन और द्वार पटों पर ज्यामितीय और रेखाओं का सुन्दर प्रयोग है। इस काल की चित्रकला में चित्रकला की अपेक्षा आलेखन कला के गुण अधिक आ गये उसकी चरम अवनति आगे चलकर अपभ्रंश शैली में हुई। **चित्र (27)** अपभ्रंश शैली के चित्रों में खिलौनों की तरह पशु–पक्षियों का अलंकरण किया गया है। यहाँ प्राकृतिक दृश्यों की कम दिखायी देती है। एक धरातल पर अनेक चित्रों का अलंकरण हुआ। 15–16 वीं शताब्दी तक हाथियों पर अलंकरण किया गया चित्र में सोने का भी अत्याधिक प्रयोग हुआ।

चित्र (26) जैन शैली

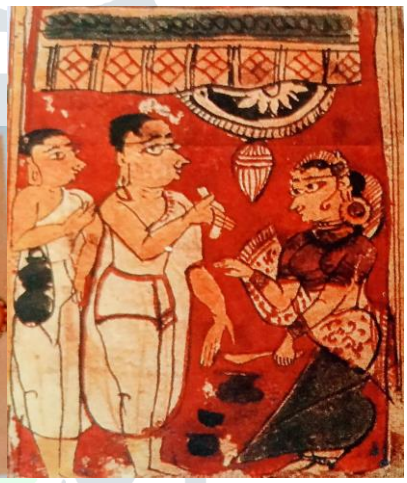

चित्र (27) जैन शैली

मुगलकाल में लगभग सभी चित्रों में हाशियों को महीन बेल–बूटों से अलंकृत कर सजाया गया है। इन हाशियों के कारण मुगल काल के चित्रों में अलंकारिक 'मोटिफ्स' का प्रयोग समकालीन चित्रों की अपेक्षा अधिक दिखता है। **चित्र (28)**

जैसे–जैसे संस्कृति साहित्य का महत्व बढ़ता गया उसी तरह प्राचीन भारतीय कलाओं में से दिव्यता का संदर्भ घटाया गया। उसके आयामों और प्राणवत्ता में कमी आती गयी। अब तक के प्रागैतिहासिक काल के सन्दर्भ में प्राप्त चित्रों के अध्ययन से यह पता चलता है कि कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है। मुगलकालीन सभ्यता में भित्ति चित्र बनाने की परम्परा को बढ़ावा मिला इस समय भित्ति चित्रों का उद्देश्य गृह साज–सज्जा था। वह परम्परा आज भी अपने मूल रूप में विद्यमान है। आज भी गाँवों में यह परम्परा विद्यमान है।

कामसूत्र में कला के छह अंग बताये गये हैं।

रूप भेद प्रमाणानि भाव लावण्य योजनाम्

सादृश्यम् वर्णिका–भंग इती चित्रम् षडंगकम्

चित्र (28) मुगल काल 18 वीं शताब्दी

इन प्राचीन युक्तियों को अप्रांसांगिक समझकर कई लोग इसकी उपेक्षा भी कर जाते हैं। **लावण्य को एक दिव्य सौंदर्य के रूप में चित्रित करने का सबसे पुराना उदाहरण अजन्ता के भित्ती चित्रों में मिलता है।** जैन और बौद्ध की धार्मिक पांडुलिपियों में कथाओं के दृष्टांत चित्र मिलते हैं, पर उनके चित्रों में लावण्य नहीं मिलता । 1555 ई. में, फिर एक त्वरित मोड़ आता है जब मुगल सम्राट हुमायूँ ईरान से दो चित्रकार मीर सैय्यद अली और अब्दुल समद को अपने साथ लाता है इसके बाद मुगल लधुचित्रों में भी उच्चकोटि के चित्रों का निर्माण हुआ । राजस्थानी चित्रकला में भी हमें सुन्दर और उत्कृष्ट चित्र प्राप्त हुए हैं। यह परम्परा राजस्थान की सभी उपशैलियों तथा पहाड़ी चित्रकला में भी दिखती है। **चित्र (29)**

चित्र (29) मेवाड शैली, गीता गोविन्द, राजस्थानी

बसोहली से प्राप्त इस **चित्र (30)** पहाड़ी में मानवाकृतियों के वस्त्रों को अलंकृत किया गया है पेड़ो को भी एक ही डिजाइन की पुनरावृत्ति कर अलंकृत किया गया है हर पेड़ की डिजाइन लगभग अलग–अलग है चित्र में उपस्थित पुरूषाकृति के वस्त्र को पत्तीनुमा डिजाइन द्वारा बड़ी ही सुन्दरता से सजाया गया है जहाँ कमरबंद में आड़ी रेखाओं का प्रयोग किया गया है वहीं पैजामें में खड़ी रेखाओं का प्रयोग किया गया है। चटक लाल रंग के अलंकृत इस वस्त्र के साथ पुरूषाकृति उभरकर आती है साथ ही चित्र में दिखाये गये महल को ज्यामितीय आकारों की पुरावृत्ति कर अलंकृत किया गया है।

चित्र (30) बसोहली 17 वीं शताबदी,

जयपुर के भवन तथा उसके पास अंबर नाम का यह किला जो कि राजपूत किलों में से एक है में सुन्दर काम किया गया है। फूल–पत्तियाँ, बेल–बूटे, चटक रंग तथा रंखाओं के संयोजन से इन भित्ति चित्रों को उकेरा गया। **चित्र (31)**

चित्र (31) भित्ति चित्र, सिटी पैलेस, जयपुर

सिटी पैलेस तथा अंबर किले के इन मोटिफ्स को देखकर ही हमें इन महलों की भव्यता का आभास हो जाता है **चित्र (32)**। ज्यामितीय तथा प्राकृतिक दोनों ही प्रकार के मोटिफ्स का प्रयोग सुंदरता से हुआ। शीश महल, सिटी पैलेस, के मोटिफ्स में शीशे तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस का प्रयोग किया है। राजस्थानी तथापहाडी लघु चित्रों के भवनों में भी अलंकारिक मोटिफ्स का अंकन हुआ। वस्त्रों, आभूषणों तथा प्राकृतिक संयोजनों में भी अलंकारिक मोटिफ्स का अंकन भरपूर

हुआ। आधुनिक काल के चित्रों में भी अलंकारिक मोटिफ्स का प्रयोग हुआ। आज भी कई वरिष्ठ कलाकार अपने चित्रों में इनका प्रयोग कलात्मकता से करते हैं। **चित्र (33)**

चित्र (32) राजपूत किला, अंबर किला, जयपुर

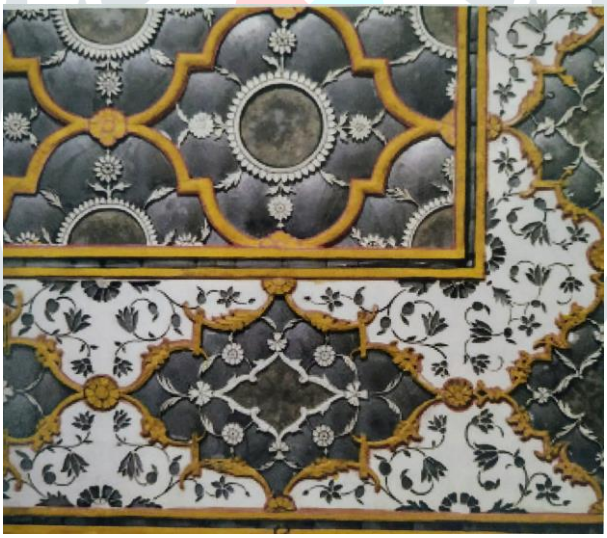

चित्र (33) शीश महल, सिटी पैलेस, जयपुर

भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का सजीव व साक्षात रूप लोक–कलाओं में देखने को मिलता है। लोक कलाएँ सामूहिक मान्यताओं द्वारा उद्भावित होती है व दिशा पाती है धर्म, संयम, आचार्य–विचार, नैतिक मूल्य, त्याग, दान दया आदि का संश्लेषण इन कलाओं में दर्शनीय होता है। इनमें अंकित आकार उक्त घटकों का पर्याय होते हैं इनकी बनावट, संयोजन, तकनीक आदि मिलकर विशेष रचना–शैली का निर्माण करते हैं जो एक क्षेत्र विशेष की संस्कृति व परम्पराओं और सामाजिक मनोविश्लोषण की पहचान को दर्शाते हैं। यह समस्यक घटक अभिप्रायों अर्थात मोटिफ रूप में परिभाषित होते हैं इसीलिए अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

चित्र (34) लोक कला

इन कलाओं को मूल आधार हमारी सामाजिक व धार्मिक आस्थाएँ रही है। हमारे यह षोड्स संस्कार, पर्व, उत्सव, मेले आदि इन्ही आस्थाओं का परिणाम हैं सृष्टि के प्रारंभ से ही प्रकृति न केवल रचना की आधारशिला रही वरन् जीवन–दाता व पूज्यनीय भी रही है। प्रकृति को मानव ने देवता के रूप में स्वीकारा। फलस्वरूप धार्मिक आस्था के रूप में तो कला में प्रकृति ने स्थान पाया ही, अलंकरण व प्रतीक रूप में भी प्राकृति अभिप्रायों का विशेष स्थान रहा है। सूर्य व चंद्र का अंकन यहाँ अधिकांशतः सभी लोक–चित्रो में हुआ है, जो इन चित्रों की लाक्षणिकता मानी जा सकती है। ज्योति पट्ट विरूड़ाष्टिमि पट्ट, गोबर्धन पूजा–अंकन, सूर्य–दर्शन चौकी, कृष्ण–जन्माष्टमी पट्ट, दुर्गा थापा, वट–सावित्री पट्ठ आदि सभी में ऊपर की ओर दाए व बाए कोने में सूर्य–चंद्रमा को विशेष स्थान दिया गया है। सूर्य उच्च–विज्ञान या बुद्धि का प्रतीक है और चंद्र इंद्रियानुगामी मन या प्रज्ञान का प्रतीक है। दोनों ही प्राण–दाता भी है प्रकाश देने वाले है। इसीलिए इन्हें देवता का रूप माना गया है। उन्हें नमन करते हुए पूजा की दृष्टि आज भी इनका अंकन लोक चित्रों में अवश्यक मिलता है यज्ञोपवीत संस्कार के समय अंकित किये जाने वाले जनेऊ नामक अंकन में सप्तऋषि मंडल के प्रतीक्ष स्वरूप सात सितारों का अंकन देखने को मिलता हभित्ती चित्रण में मुख्य रूप से 'कोहवर' आता है

चित्र (35) विवाह लोक कला

सके अतिरिक्त भी यहाँ अनेक प्रकार के चित्र दीवार पर बनाने की परम्परा है। 'कोहबर' चित्रण को यहाँ कोहबर लेखन कहा जाता है। ये आकृतियाँ इतनी स्पष्ट और सरल होती है। कि उनको आसानी से पढ़ा जा सकता है। बिहार के अन्य क्षेत्रों में भी विवाह के समय कोहबर बनाने की प्रज्ञा है परन्तु जिस विधि और विधान और मनोयोग के साथ कोहबर–अंकन होता है, अन्यत्र प्रतीत नहीं होता। कोहबर वह स्थान है जहाँ विवाह के समय नव–दम्पत्ति मिलते हैं। इसके तीन भाग होते हें–पहला–गोसाई घर (जहाँ कुल देवता स्थापित होते हैं), दूसरा–कोहबर घर (जहाँ नव दम्पत्ति प्रथम बार मिलते हैं) तीसरा–कोहबर घर कोनिया (यहाँ कोहबर का बाहरी भाग), होता है। इन तीनों स्थानों में अलग–अलग प्रकार के चित्रांकन का विधान है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1– भारतीय चित्रकला का इतिहास–अविनाश बहादुर : पृष्ठ 55
2– दृष्टि और सृष्टि–नन्दलाल बसुः पृष्ठ 174
3– भारतीय चित्रकला का इतिहास–अविनाश बहादुरः